

बुद्ध के धम्म में है सभी सामाजिक समस्याओं का समाधान

प्राप्ति: 15.07.2022
स्वीकृत: 16.09.2022

59

डा० अरविन्द सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
तिलक महाविद्यालय, औरैया उ०प्र०

ईमेल: singharvindsociology@gmail.com

सारांश

जहाँ समाज है वहाँ सामाजिक समस्याएँ भी हैं, इन समस्याओं को समाप्त करने के लिए सदियों से महापुरुष, सन्त एवं समाजसेवी प्रयास करते रहे हैं, परन्तु तथागत बुद्ध ने अपने धम्म में इन सामाजिक समस्याओं को बैज्ञानिक (तार्किक) तरीके से समाप्त करने का फॉर्मूला बताया है, उन्होंने कहा है कि संसार में बहुत दुःख है दुःख का कारण है, दुःख का निवारण है, तथा दुःख निवारण का मार्ग भी है। इस दुःख या समस्या के निवारण के लिए बुद्ध ने कई रास्ते बताये जिसमें पंचशील का पालन, एवं अष्टांगिक मार्ग प्रमुख है, जिसका शोध अध्ययन में वर्णन किया गया है, तथा तथ्यों का संकलन द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से किया गया है।

मुख्य बिन्दु

पंचशील, अष्टांगिक मार्ग, सम्यक स्वरूप, सदमार्ग, तृष्णा, आदि।

प्रस्तावना

प्रत्येक युग में किसी न किसी रूप में सामाजिक समस्याएँ व्याप्त रही हैं जिन्हें दूर करने हेतु अनवरत प्रयास भी किये जाते रहे हैं। वर्तमान समाज भी विभिन्न प्रकार की सामाजिक समस्याओं से जूझ रहा है अर्थात् मानव समाज इनके कारण दुःखी है। सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं, धर्म गुरुओं एवं समाज सेवियों द्वारा इन समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जाता रहा है। परन्तु ये उपाय दुःख निवारण में अपर्याप्त ही सिद्ध हुए हैं बुद्ध के धम्म का भी मुख्य ध्येय मानव को इन गंभीर सामाजिक समस्याओं से उत्पन्न दुःख से छुटकारा दिलाना है। बुद्ध के धम्म में वर्णित चार आर्य सत्य किसी समस्या के समाधान की वैज्ञानिक पद्धति प्रस्तुत करते हैं। स्वयं गौतमबुद्ध को साक्षात् अनुभव हुआ था कि 1—संसार दुःखमय है। 2—दुःखों का कारण है—वे दुःख से पीड़ित होकर उसके नाश करने के उपायों को ढूँढते थे अर्थात् 3—उन्हें विश्वास था कि दुःख का नाश होता है (दुःख निरोध) तथा 4—दुःखों के नाश के लिए उपाय भी है (दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा) इन्हीं चार बातों को लोगों को समझाने के लिये तत्त्व ज्ञान होने पर भी बुद्ध ने अपने शरीर की रक्षा की।

अध्ययन के उद्देश्य

1. समाज में व्याप्त सामाजिक समस्याओं का वर्णन करना।
2. बुद्ध के धम्म के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना।

3. सामाजिक समस्याओं के निदान हेतु बुद्ध के पंचशील एवं अष्टांगिक मार्ग का वर्णन करना।
4. दुःख निरोध हेतु धम्म की महत्ता का वर्णन करना।
5. बुद्ध के धम्म की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करना।
6. समाज में सुख, शांति एवं सह-अस्तित्व की भावना विकसित करना।

अध्ययन पद्धति

बुद्ध के धम्म में है सभी सामाजिक समस्याओं का समाधान नामक विषय पर किये जाने वाले अध्ययन में अध्ययन उद्देश्यों का दृष्टिगत रखते हुए द्वितीयक समकों का प्रयोग किया जायेगा जिन्हें प्राप्त करने हेतु विभिन्न पुस्तकों तथा पत्र/पत्रिकाओं का सहारा लिया जायेगा।

गौतमबुद्ध के जन्म से ही ज्योतिषियों का यह मानना था कि "यह बालक संसार को दुःखों से मुक्ति दिलाने का सफल प्रयत्न करेगा यह अपने जीवन के आरम्भ में ही दुःखी, ज्वरी, मृत्यु शरीर तथा परिग्राजक के कष्ट को देखकर उनके दुःख से दुःखी होकर घर द्वार छोड़कर तपस्या के लिये जंगल को चला जायेगा।"¹

गौतमबुद्ध बड़े ही सरल स्वभाव के व्यक्ति थे उनमें दूसरो के कष्टों को सहन करने की क्षमता नहीं थे वे दूसरो के दुःख से दुःखी होकर अत्यन्त ही व्याकुल हो उठते थे। जैसा कि उमेश मिश्र ने अपनी पुस्तक 'भारतीय दर्शन में लिखा है—' गौतमबुद्ध बहुत ही दुर्लभ प्रकृति के व्यक्ति थे इन्हें दूसरों का दुःख भी सहन नहीं होता था फिर अपने दुःख की तो बात ही क्या है।"²

गौतमबुद्ध के घर छोड़ने को लेकर भी विभिन्न विद्वानों द्वारा तरह-तरह के कयास लगाये जाते रहे हैं जबकि वास्तविकता यह थी कि "गौतमबुद्ध ने केवल, पर-दुःख को न सह सकने के कारण घर छोड़ा था न कि यज्ञों में हिंसा को देखकर जैसा कि आज-कल के पाश्चात्य शिक्षा सम्पन्न विद्वान समझते हैं।"³

तत्व ज्ञान को प्राप्त कर या जीवन के चरम लक्ष्य तक पहुँचकर कुछ लोग शरीर को छोड़ देते हैं और परमात्मा के साथ एक हो जाते हैं। परन्तु कुछ लोग 'आप्तकाम' होने पर भी संसार को कल्याण मार्ग पर ले जाने के लिए शरीर की तब तक रक्षा करते हैं जब तक उनके 'प्रारब्ध कर्म' के भोग पूर्ण नहीं हो जाते या जब तक उनकी इच्छा रहती है बुद्ध ने भी स्वयं ज्ञान प्राप्त कर अपने को दुःखों से विमुक्त कर दूसरों को भी अपने अनुभवों के द्वारा दुःख से विमुक्त करने के लिए अपने शरीर की रक्षा की उसे नाश नहीं किया।"⁴

गौतमबुद्ध ने सांसारिक दुःखों को महसूस करते हुए कहा कि "आदमी दुःखी है, कष्ट में है और दरिद्रता का जीवन व्यतीत कर रहे है संसार दुःख से भरा पड़ा है और धर्म का उद्देश्य इस दुःख का नाश करना ही है इसके अतिरिक्त सद्धर्म और कुछ भी नहीं है।"⁵

भगवान बुद्ध के अनुसार "दुःख के अस्तित्व की स्वीकृति और दुःख के नाश करने का उपाय ही धर्म की आधारशिला है।"⁶

तथागत बुद्ध को व्यवहारिक जगत का पूर्ण ज्ञान था और व्यवहारिकता के साथ चलने से ही सर्वसाधारण की भलाई होगी इसका उन्हें पूर्ण विश्वास था। यह भी उनके मन में निश्चित था कि कर्तव्य पद पर चल कर उपासना के द्वारा तपस्या की सहायता से अन्तःकरण की शुद्धि पहले लोग करें बाद में आत्मा के सम्बन्ध में सभी बातें स्वयं लोग समझ जायेंगे इसी लिये बुद्ध ने लोगों को कर्म

की शिक्षा पहले दी। आत्मा आदि तत्वों के सम्बन्ध में अर्थात् संसार नित्य है या अनित्य ? आत्मा शरीर से भिन्न है या अभिन्न ? यह मूर्त है या अमूर्त ? मृत्यु के बाद आत्मा रहती है या नहीं ? आदि रहस्यमयी प्रश्नों के पूछे जाने पर वह मौन रहते थे इसका कारण स्पष्ट है कि सभी लोग इतने सूक्ष्म विषय को नहीं समझ सकते फिर उन्हें इस प्रकार का उपदेश देना बेकार है। प्रत्युत रहस्यपूर्ण उपदेश देने से लोग अज्ञानता के कारण और भी व्यस्त हो जायेंगे। वे उल्टी बातें समझ लेंगे एवं बुद्ध को पक्षपाती कहकर उनके साथ विवाद उपस्थित कर देंगे इन कारणों से बुद्ध ने मौन रहना पसन्द किया। अतएव बुद्ध ने पहले उन बातों का उपदेश दिया जिनका उन्हें स्वयं अनुभव हुआ था एवं वे मनुष्यों के साक्षात् कल्याण के लिए थी।” 7

समाज में व्यक्तियों को उचित मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने के साथ-साथ उनके लिए अच्छाई बुराई के मापदण्ड निर्धारित करना भी उतना ही आवश्यक है। इन मापदण्डों के अभाव में व्यक्ति मार्ग से भटक सकता है। इस सम्बन्ध में बुद्ध ने अपने परिब्राजकों से कहा था कि “कोई भी आदमी जो अच्छा बनना चाहता है उसके लिए यह आवश्यक है कि वह कोई अच्छाई का मापदण्ड स्वीकार करें। पवित्रता के पथ के अनुसार अच्छे जीवन के पाँच मापदण्ड हैं जिन्हें भगवान बुद्ध के पंचशील के नाम से जाना जाता है। पंचशील बुद्ध के ऐसे नियम हैं जिन्हें यदि सभी मनुष्य अपना लें तो समाज की अधिकांश समस्याओं का स्वयं समाधान हो जायेगा, ये पंचशील निम्नवत् हैं—

1. पाणाति पाता वेरमणी सिक्खापदं समादियामि— अर्थात् मैं अकारण प्राणी हिंसा न करने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।
2. अदिन्नादाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि—मैं बिना अनुमति लिए दूसरे की वस्तु न लेने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ। अर्थात् चोरी न करने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।
3. कामेसु भिच्छाचारा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि—मैं अनैतिक कामाचार न करने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ। अर्थात् पराई स्त्री को गलत नजरों से नहीं देखूँगा न ही किसी प्रकार के व्यभिचार न करने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।
4. मूसावादा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि—मैं झूठ न बोलने एवं चुगली न करने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।
5. सुरामेरयमज्ज पमादाट्ठाना वेरमणि सिक्खापदं समादियामि—मैं कच्ची पक्की शराब एवं किसी भी प्रकार के नशील पदार्थों का सेवन न करने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।

यदि उपर्युक्त शीलों का सभी मनुष्य पालन करें तो समाज में लड़ाई झगड़ों एवं विभिन्न प्रकारों अपराधों में तेजी से कमी लाई जा सकती है, समाज में भाईचारा बढ़ेगा तथा लोगों जीवन सुखमय होगा।

मैं कहता हूँ कि हर आदमी के लिए यह परमावश्यक है कि वह इन पाँच शीलों को स्वीकार करें। क्योंकि हर आदमी के लिये जीवन का कोई मापदण्ड होना चाहिए जिससे वह अपनी अच्छाई बुराई को माप सके मेरे धर्म के अनुसार मैं पाँच शील जीवन की अच्छाई-बुराई मापने के लिये मापदण्ड है।

धर्म का सर्वांगीण सम्यक् स्वरूप

सम्यक् का अर्थ है सही, यर्थात्, सत्य। अतः सम्यक् धर्म माने सत्य धर्म सत धर्म या सद्धर्म। ऐसा धर्म जिसमें मिथ्या तत्व को कहीं स्थान न हो और जिसका कल्पना से कोई वास्ता न हो।

सर्वांगीण सम्यक् धर्म को जीवन में उतारने का अभ्यास करते रहने में हमारा सही मंगल समाया हुआ है बिना किसी जाति सम्प्रदाय या भेद भाव के सबका सही मंगल इसी में समाया हुआ है।

भगवान बुद्ध ने सर्वांगीण सम्यक् धर्म को जीवन में उतारने हेतु अष्टांगिक मार्ग बताया जो निम्न है—

1. हमारी वाणी सम्यक् हो— वाणी सम्यक् तब होती है जबकि हम झूठ, कपट, गाली गलौज, कटु, कठोर, चुगली, निन्दा और ऊल, जलूल बकवास भरे वचनों से वस्तुतः छुटकारा पा लेते हैं।
2. हमारे शारीरिक कर्म सम्यक् हो—शारीरिक कर्म सम्यक तब होते हैं जबकि हम हिंसा, हत्या, चोरी—जारी, नशे—पते आदि के दुष्कर्मों से यथार्थतः मुँह मोड़ लेते हैं।
3. हमारी आजीविका सम्यक हो—आजीविका तब सम्यक होती है जबकि हम अपने जीवन—यापन के साधनों को वास्तविकता के स्तर पर शुद्ध करते हुए छल—कपट जालसाजी, तस्करी, चोरी को सर्वथा त्यागते हैं और ऐसा कोई व्यवसाय नहीं करते जिससे कि धन संचय की तीव्र लालसा के वशीभूत होकर अन्य अनेकों को हानि पहुँचाये।
4. हमारा प्रयत्न सम्यक हो—प्रयत्न सम्यक तब होते हैं जबकि हर प्रयत्न सचमुच एक ऐसा व्यायाम बन जाता है जिससे कि हमारा मन दुर्गुण विपन्न और सदगुण सम्पन्न हो।
5. हमारी जागरुकता सम्यक हों—जागरुकता सम्यक तब होती है जबकि हम अपने कायिक, वाचिक, मानसिक कर्मों के प्रति सजग सचेत रहने वास्तविक अभ्यास में जुट जाते हैं।
6. हमारी समाधि सम्यक हों—समाधि सम्यक तब होती है जबकि सतत् अभ्यास द्वारा हम अपने चित्त को किसी सत्य आलम्बन के सहारे देर तक सजग, समाहित रख सकने में सचमुच सफल होते हैं।
7. हमारे संकल्प सम्यक हो—संकल्प तब सम्यक होते हैं जबकि हम अपनी चित्त धारा पर से हिंसा, क्रोध, द्वेष, दौर्मनस्य, की दुर्वृत्तियाँ वास्तव में दूर कर देते हैं।
8. हमारे दर्शन सम्यक हों—दर्शन तब सम्यक होता है जबकि हम बुद्धि किलोल से छुटकारा पाकर परमसत्य का यथार्थता दर्शन कर लेते हैं। दर्शन माने सत्य की स्वानुभूति। अपने ही भीतर स्थूल सत्य से आरम्भ करके सूक्ष्म से सूक्ष्मतर सत्यों की स्वानुभूति करते हुये जब परम सत्य स्वानुभूति होती है तो ही दर्शन सम्यक होता है।”

सद्मार्ग पर चलते समय हो सकता है कि व्यक्ति अकेला पड़ जाये उसका कोई साथ न दे तब भी उसे सद् मार्ग से विचलित नहीं होना चाहिए।

“सल्लेख—सुत्त—3 में तथागत ने इस बात पर जोर दिया कि आदमी में इस बात का साहस हो कि चाहे वह अकेला ही हो तब भी उचित मार्ग से विचलित न हो। उन्होंने कहा कि—

1. तुम्हें अपने मन को निर्मल बनाने के लिये निश्चय करना चाहिए कि चाहे दूसरे लोग हानि करें मैं हानि नहीं करूंगा।
2. चाहे दूसरे लोग हिंसा करें मैं हिंसा नहीं करूंगा।
3. चाहे दूसरे लोग चोरी करें मैं चोरी नहीं करूंगा।

4. चाहे दूसरे लोग श्रेष्ठ जीवन व्यतीत न करें मैं श्रेष्ठ जीवन व्यतीत करूंगा।
5. चाहे दूसरे लोग झूठ बोले, चुगली करें, कठोर बोले अथवा व्यर्थ बकवास करें मैं नहीं करूंगा।
6. चाहे दूसरे लोग लोभी हों मैं लोभ नहीं करूंगा।
7. चाहे दूसरे लोग द्वेष करें मैं द्वेष नहीं करूंगा।
8. चाहे दूसरे लोग मिथ्या दृष्टि हो, मिथ्या संकल्प वाले हों, मिथ्या वाणी वाले हों, मैं सम्यक दृष्टि होऊँगा, सम्यक वाणी, सम्यक, कर्मात्, सम्यक आजीविका, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति, तथा सम्यक समाधि वाला होऊँगा।
9. चाहे दूसरे सत्य के विषय में गलती पर हो, मुक्ति के विषय में भी गलती पर हो, मैं सत्य और मुक्ति दोनों विषयों में गलती पर नहीं होऊँगा।
10. चाहे दूसरे आलस्य और तन्द्रा से युक्त हो, मैं आलस्य और तन्द्रा से मुक्त रहूँगा।
11. चाहे दूसरे उद्वत स्वभाव के हों, मैं विनम्र स्वभाव का रहूँगा।
12. चाहे दूसरे विचिकित्सायुक्त हों, मैं विचिकित्सा से मुक्त रहूँगा।
13. चाहे दूसरे क्रोधी, हों, द्वेषी हों, ईश्यालु हों, कंजूस हों, लोभी हों, बाधक हों, उद्वत हों, दुस्साहसी हों, कुसंगति वाले हों, ढीले ढाले वाले हों, चकित हों, मैं इन सबके विरुद्ध होऊँगा।
14. चाहे दूसरे लोग लौकिक वस्तुओं से चिपटे रहे मैं जो लौकिक वस्तुयें नहीं है उनसे चिपटूँगा और परित्यागशील रहूँगा।

इन सभी संकल्पों के सम्बन्ध में जो मैंने बताये हैं, दृढ़ निश्चयी होना चाहिए महाकारुणिक बुद्ध के अनुसार यह धम्म का उद्देश्य है।

“सर्वश्रेष्ठ आदमी”चारिका करते समय महाकारुणिक बुद्ध ने उन भिक्षुओं को जो साथ चल रहे थे यह उपदेश दिया।

भिक्षुओं को सम्बोधित करते हुये तथागत बुद्ध ने कहा कि भिक्षुओ ! इस संसार में चार तरह के लोग हैं।—

1. जिसने न अपना भला किया और न दूसरों का भला किया।
2. जिसने दूसरों का भला किया किन्तु अपना भला नहीं किया।
3. जिसने अपना भला किया किन्तु दूसरों का भला नहीं किया।
4. जिसने अपना भी भला किया तथा दूसरों का भी भला किया।

जिस आदमी ने न अपना भला करने का प्रयास किया और न दूसरों का भला करने का प्रयास किया वह शमशान की उस लकड़ी की तरह है जो दोनों सिरों पर जल रही है जिसके बीच में मैला लगा है, वह न ही गांव में जलावन के काम आती है और न जंगल में। इस तरह का आदमी न संसार के किसी काम का होता है और न अपने किसी काम का।

जो अपनी हानि करके दूसरों का उपकार करता है वह दोनों में अधिक अच्छा है।

लेकिन भिक्षुओं ! चारों तरह के आदमियों में सबसे अच्छा तो वही है जिसने दूसरों का भला करने का प्रयास किया और अपना भला करने का भी प्रयास किया।

मानसिक रोगों के सफल वैद्य भगवान बुद्ध मानसिक रोगों के सफल बैद्य थे और उन्होंने अपने अष्टांगिक मार्ग में तृष्णा (वासना, लालसा) की उस बीमारी का सफल इलाज प्राप्त किया था और उसके इलाज का पूरा तरीका बतलाया था। वह भगवान बुद्ध हमको इन मानसिक बीमारी की आग से बचने के सुनिष्ठ प्रयास करने के मार्ग का दिग्दर्शन करते हैं।

बुद्ध धम्म के सम्पूर्ण सिद्धान्तों को एक गाथा या कारिका में सन्निहित कर दिया उसका अनुवाद यह है—

“सभी पापों से विरत रहना, अपनी भलाई और दूसरों की भलाई के लिये जो कुशल कर्म है उनको करना चित्त को उन्नत और पवित्र बनाना यही भगवान बुद्ध का धम्म है।”¹²

बुद्ध के धम्म के सिद्धान्तों की प्रासंगिकता हर युग में रही है। आज भी महाकारुणिक बुद्ध का अहिंसा का सिद्धान्त सभी प्राणियों में आध्यात्मिक उन्नति कर सकता है। उनके सिद्धान्तों की प्रासंगिकता इसी बात से सिद्ध होती है कि अनेक महापुरुषों ने चाहें वे किसी धर्म से सम्बन्धित रहे हों उनकी शिक्षाओं को अपनाया जरूर है। गांधी जी ने भी बुद्ध के धम्म को आंशिक रूप से अपनाया उनके अहिंसा के सिद्धान्त को अपना कर घोषणा की कि मानवीय अहिंसा ही भारत की स्वतंत्रता को प्राप्त करायेगी। उन्होंने धम्म के समता के सिद्धान्त का भी अनुशरण किया था और निम्न वर्ग के लोगों को हिन्दू मन्दिरों में प्रवेश की बात कहीं, अछूतों को समान अधिकार दिलाने के लिये अस्पृश्यता के विरुद्ध आन्दोलन चलाया।

पूर्व में सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म को अपना कर अनेक योद्धाओं को अहिंसा के अस्त थे पराजित किया और एक छत्र राज्य किया उसने अपने धर्म प्रचारकों के माध्यम से विश्व प्रेम और मानव समता के संदेश को दूर-दूर तक पहुँचाया। श्रीलंका, वर्मा, जापान, चीन एवं अन्य बौद्ध देशों की सभ्यता एवं संस्कृति बौद्ध धर्म की ही देन है। बौद्ध धर्म ही वह शिक्षक है जिसके उपदेशों के अन्तर्गत जापान राष्ट्र सम्मुन्नत हुआ है।

बौद्ध धर्म भारत के अन्धकार युग में विलुप्त हुआ किन्तु शिक्षा एवं ज्ञान के प्रसार के साथ यह प्रबुद्ध भारत में लौट रहा है। बौद्ध धर्म के महत्व को समझते हुये यूरोप की भाषाओं में त्रिपिटक का अनुवाद किया गया। इसमें कोई संदेह नहीं है कि मानव स्वतंत्रता के उपासकों में किसी ईश्वरीय सहायता से स्वतंत्र अपनी सहायता आप करों की शिक्षा ही स्वागत करने एवं अपनाने योग्य होगी। हमारा यह विश्वास है कि जैसे-जैसे ज्ञान, तर्क, बुद्धि एवं कार्य-कारण सम्बन्ध का लोगों में प्रसार होने के साथ-साथ विश्व के विद्वान महाकारुणिक बुद्ध को एक पद-प्रदर्शक ही नहीं संरक्षक के रूप में देखेंगे। और युद्ध की विभीष्का के समाप्त होने पर बौद्ध धर्म ही असहाय दुःखी और कन्दित जंग में शांति और समृद्धि (प्रसन्नता) को लायेगा और वह इस धर्म के विश्व प्रेम और बन्धुत्व के सिद्धान्त (मिशन) के आधार पर समस्त संसार को एक सूत्र में बांधकर उनके मध्य मधुर सम्बन्ध स्थापित करेगा। फलस्वरूप सामाजिक समस्याओं के रूप में व्याप्त दुख से समस्त संसार को छुटकारा मिल सकेगा जिसमें सभी सुखी एवं निरोगी होंगे।

सन्दर्भ

1. मिश्र, उमेश. भारतीय दर्शन. उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान: लखनऊ. पृष्ठ 134.
2. तदैव।
3. कृष्णन, प्रो० सर्वपल्ली राधा. इण्डियन फिलॉसफी. भाग-1 पृष्ठ 354.

4. मिश्र, उमेश. भारतीय दर्शन. उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान. लखनऊ पृष्ठ 135.
5. अम्बेडकर, डा० भीमराव. भगवान बुद्ध और उनका धर्म. बुद्ध भूमि प्रकाशन नागपुर पृष्ठ 95.
6. संयुक्त निकाय।
7. मिश्र, उमेश. भारतीय दर्शन. उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान. लखनऊ पृष्ठ 136.
8. तदेव।
9. अम्बेडकर, डा० भीमराव. भगवान बुद्ध और उनका धर्म. बुद्ध भूमि प्रकाशन: नागपुर. पृष्ठ 95.
10. गोयन्का, सत्यनारायण. सम्यक धर्म—विपश्यना विशोधन विन्यास धम्मगिरी. इगतपुरी: महाराष्ट्र पृष्ठ 2-3.
11. सल्लेख सुत्तन्त (मज्झिम निकाय) 1/1/8.
12. अम्बेडकर, डा० भीमराव. भगवान बुद्ध और उनका धर्म. बुद्ध भूमि प्रकाशन: नागपुर. पृष्ठ 302-303.
13. मुत्सद्दो, महापण्डित उमेशचन्द्र., अम्बेडकर, डा० भीमराव. बौद्ध धर्म की रूपरेखा और हिन्दू धर्म से कैसे और क्यों भिन्न है? बहुजन कल्याण प्रकाशन: सआदतगंज, लखनऊ-3 पृष्ठ 21.